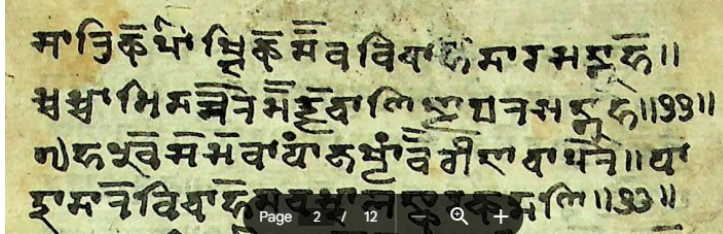
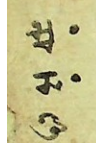


Shiva Svarodaya

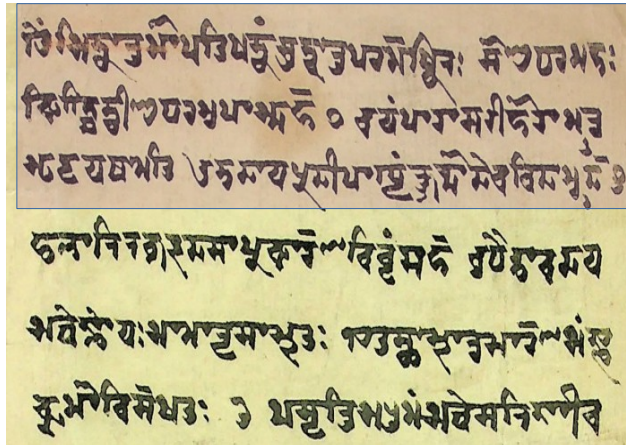


शांतिके पौष्टिके चैव दिव्यौषधिरसायने ।
स्वस्वामिदर्शने मित्रे वाणिज्ये कणसंग्रहे १०४॥

गृहप्रवेशे सेवायां कृषौ च बीजवापने ।
शुभकर्मणि संघौ च निर्गमे च शुभः शशी १०५॥

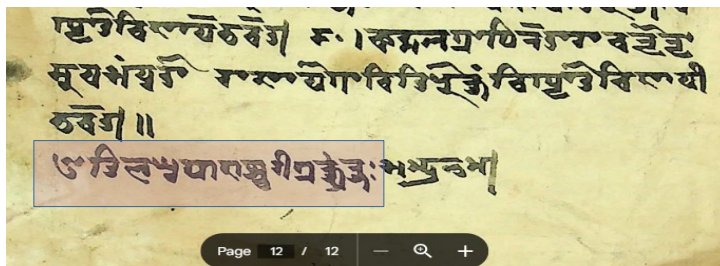
Ref : https://archive.org/details/IRMz_shiv-svarodaya-mm-pt.-mihir-chand-1948-khemraj/page/n45/mode/2up

Laghu Paarashari Granta

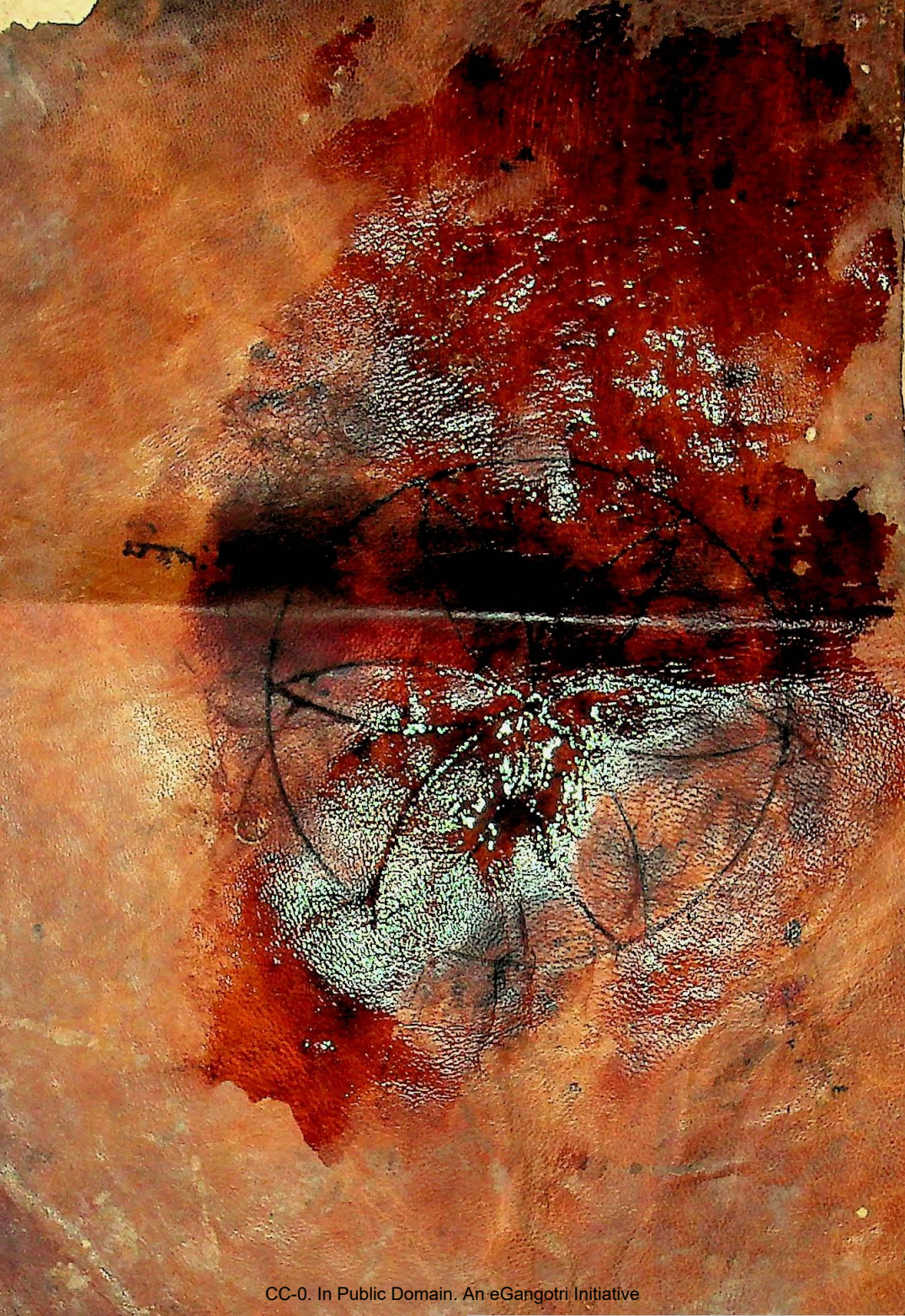


सिद्धांतमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः ।
शोणाघरं महः किञ्चिद्द्वीणाघरमुपास्महे ॥१॥

वयं पाराशरौ होरामनुसृत्य यथामात ।
उडुदायप्रदीपाख्यं कुर्मो देवविदां मुदे ॥२॥



Ref : <https://archive.org/details/laghu-parashari-parashar-muni/page/n5/mode/2up>



मात्रिके धां ध्रुक् सैव विद्याः सारमस्तु ॥
 धृष्टा भिमज्जेन मैहृवालिष्टा घनमस्तु ॥११॥
 गुरुभवे सैव वां कर्तुं वैरीणां वापने ॥ या
 इमं न विद्याः सवभूलक्ष्मकमलि ॥१३॥
 मुक्तकमलि भवे स भवे स मसी मुक्तः ॥ यत्
 सवभुति धां धी क्षां भद्रभा घने ॥१५॥ वि
 द्या रभे धु भवे धु रात्रुवा नं मम ज्ञे ॥ एतमे
 र्म सवभु मरमभा घनकमलि ॥१५॥ कला वि
 द्या नभे वां धां भुक्तकमलि धा निम ॥ उद्युते
 र्मुधुभा भा सवभा धी कु भउकु कयेः ॥१७॥ म
 चकमलि भिमज्जेति विद्याः हिमता निम ॥
 नीउवा ह्य मि चं दुम निपीनं भुभनं उवा ॥१७॥
 मुमुमेक उकु के विद्याः स मस्तुति ह्य पिउउवा ॥
 भवे धु मुक्तक ह्य धु मस्तु मरः भु मस्तु ॥१३॥
 उति मस्तु न्नी लुनं ॥ मय भद्र न्नी लुनं ॥

五十二

भिक्षुतिष्ठ हल न इकहा विमार ॥ ३० ॥ उ०
 ये रवम ह्यु विधु वतुं ए उव्याः ॥ न जहा
 इह ह्यु मिच्छु वे निमले ठवे ॥ ३१ ॥ ए
 विउमरले भुम्ले लाल ठल ठल एया एये ॥ वि
 भम विधगी उं भुं भुं भुं भुं भुं भुं ॥ ३२ ॥ उं भुं
 रामि उं उं उं उं उं उं उं उं उं उं ॥ उव्य
 गयले वम विधम याम वल्लुकः ॥ ३३ ॥ उं
 भिउः भुमि मे ग ह्यः प्रलभ्यः धृष्ट्य ह्यः ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३४ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३५ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३६ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३७ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३८ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ३९ ॥
 भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग भुग ॥ ४० ॥

यद्वाभ्युक्तं मुमुक्षुः कविः कृत्स्नं न संमयः ॥ १ ॥
 वामं च उच्चैर्मुमुक्षुः यः यो भूते गविः ॥ २ ॥ ५
 लविर्जुविर्कयां लुप्तो मेमिक्तः मम ॥ ३ ॥ ५
 वामा गृते उच्चैर्मुमुक्षुः मम ॥ ४ ॥ ५
 ममिक्तं मेमिक्तः मुमुक्षुः कविः मुमुक्षुः ॥ ५ ॥ ५
 इमं ममिक्तं मुमुक्षुः कविः मुमुक्षुः ॥ ६ ॥ ५
 चेत्तं ममिक्तं मुमुक्षुः कविः मुमुक्षुः ॥ ७ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ ८ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ ९ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १० ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ ११ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १२ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १३ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १४ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १५ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १६ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १७ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १८ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ १९ ॥ ५
 गतं मुमुक्षुः ममिक्तं मुमुक्षुः ॥ २० ॥ ५

श्लोकं प्रथमं कृतं कुरु यथा ॥ १० ॥ ये यस्तु यगते
 प्रथमं कुरुः प्रथमे यथा ॥ रिक्तं मंत्रं विधीयते
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ ११ ॥ या मा मा प्रथमं
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १२ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १३ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १४ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १५ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १६ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १७ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १८ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ १९ ॥ कुरु यथा कुरु यथा
 कुरु यथा कुरु यथा ॥ २० ॥ कुरु यथा कुरु यथा

१०॥

५५५

उमा रणीवडि रणीवेभो मन्त्रममरुलं ठवेडा ॥ १॥
 मन्त्रमन्त्रेयमा रणीवः मन्त्रमन्त्रेयमा रणीवः ॥
 उमा भूला विभुतेभो यमि वै हसउचउः ॥ २॥
 धिगुला यं धिउ रणीवेवामरुतमुपमुति ॥
 उमा धिभिपउ रणीयमिडातामरुतमुः ॥ ३॥
 यमिउरुमरु रणीवमुहमुः परिपमुति ॥ ४॥
 मा रणीवडि रणीवेभो रणीयमिपमिपुतः ॥ ५॥
 गवंरुडा उषा उरुडा ठला ठला रणीयमिपुतः ॥
 उमा मन्त्रः मिउपमरु ठला ठला रणीयमिपुतः ॥ ७॥
 भूतिभमरु ठला ठला रणीयमिपुतः ॥
 उमा मन्त्रः ठला ठला रणीयमिपुतः ॥ १०॥
 रणीयमिपुतः ठला ठला रणीयमिपुतः ॥ मन्त्र
 कला यमा मन्त्रः मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ॥ ११॥
 मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ॥
 मन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र ॥ १३॥

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative

ॐ तिलपुष्पापसुगीप्रक्षुद्रः मधुनभा